# Pro

## Chapter 8

### Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| קוֹלָֽהּ׃ | תִּתֵּ֥ן | וּ֝תְבוּנָ֗ה | תִקְרָ֑א | חָכְמָ֥ה | הֲֽלֹא־ | 1 |
| आवाज-अपनी | देती-है | और-समझ | पुकारती-है | बुद्धि | क्या-नहीं- | |
| | H5414 | H8394 | H7121 | H2451 | H3808 | |

> क्या सुबुद्धि तुझको पुकारती नहीं है क्या समझबूझ ऊँची आवाज नहीं देती

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| נִצָּֽבָה׃ | נְתִיב֣וֹת | בֵּ֖ית | דָּ֑רֶךְ | עֲלֵי־ | מְרוֹמִ֥ים | בְּרֹאשׁ־ | 2 |
| खड़ी-है | पथों-के | घर-पर | राह | -पर- | ऊँचाइयों-के | ऊपर- | |
| H5324 | | | H1870 | | H4791 | | |

> वह राह के किनारे ऊँचे स्थानों पर खड़ी रहती है जहाँ मार्ग मिलते हैं।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| תָּרֹֽנָּה׃ | פְּתָחִ֣ים | מְב֖וֹא | קָ֑רֶת | לְפִי־ | שְׁעָרִ֥ים | לְיַד־ | 3 |
| पुकारती-है | दरवाजों-के | प्रवेश-पर | नगर | मुख-पर- | द्वारों-के | पास- | |
| | H6607 | H3996 | H7176 | H6310 | H8179 | H3027 | |

> वह नगर को जाने वाले द्वारों के सहारे उपर सिंह द्वार के ऊपर पुकार कर कहती है,

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אָדָֽם׃ | בְּנֵ֣י | אֶל־ | וְ֝קוֹלִ֗י | אֶקְרָ֑א | אִישִׁ֣ים | אֲלֵיכֶ֣ם | 4 |
| आदम-के | पुत्रों | -की-ओर | और-आवाज-मेरी | पुकारती-हूँ-मैं | मनुष्यो | तुम्हें | |
| H0120 | | H0413 | | H7121 | H0376 | H0413 | |

> “हे लोगों, मैं तुमको पुकारती हूँ, मैं सारी मानव जाति हेतु आवाज़ उठाती हूँ।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| לֵֽב׃ | הָבִ֥ינוּ | וּ֝כְסִילִ֗ים | עָרְמָ֑ה | פְתָאיִ֣ם | הָבִ֣ינוּ | 5 |
| हृदय | समझो | और-मूर्खो | चतुराई | भोलो | समझो | |
| | H0995 | H3684 | H6195 | | H0995 | |

> अरे भोले लोगों! दूर दृष्टि प्राप्त करो, तुम, जो मूर्ख बने हो, समझ बूझ अपनाओ।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| מֵישָׁרִֽים׃ | שְׂ֝פָתַ֗י | וּמִפְתַּ֥ח | אֲדַבֵּ֑ר | נְגִידִ֣ים | כִּֽי־ | שִׁ֭מְעוּ | 6 |
| सीधी-बातें | होंठों-मेरी-का | और-खोलना | बोलूँगी-मैं | उत्तम-बातें | क्योंकि- | सुनो | |
| H4339 | H8193 | H4669 | H1696 | H5057 | | H8085 | |

> सुनो! क्योंकि मेरे पास कहने को उत्तम बातें है, अपना मुख खोलती हूँ, जो कहने को उचित है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| רֶֽשַׁע׃ | שְׂפָתַ֣י | וְתוֹעֲבַ֖ת | חִכִּ֑י | יֶהְגֶּ֣ה | אֱ֭מֶת | כִּי־ | 7 |
| दुष्टता | होंठों-मेरी-को | और-घृणा | तालू-मेरा | बोलेगा | सच्चाई | क्योंकि- | |
| H7562 | H8193 | H8441 | H2441 | H1897 | H0571 | | |

> मेरे मुख से तो वही निकलता है जो सत्य है, क्योंकि मेरे होंठों को दुष्टता से घृणा है।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| וְעִקֵּֽשׁ׃ | נִפְתָּ֥ל | בָּ֝הֶ֗ם | אֵ֥ין | פִ֑י | אִמְרֵי־ | כָּל־ | בְּצֶ֥דֶק | 8 |
| और-कुटिल | टेढ़ा | उनमें | नहीं | मुख-मेरे-के | वचन- | सब- | धर्म-में | |
| H6141 | H6617 | | H0369 | H6310 | H0561 | H3605 | H6664 | |

> मेरे मुख के सभी शब्द न्यायपूर्ण होते है कोई भी कुटिल, अथवा भ्रान्त नहीं है।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| דָֽעַת׃ | לְמֹ֣צְאֵי | וִ֝ישָׁרִ֗ים | לַמֵּבִ֑ין | נְ֭כֹחִים | כֻּלָּ֣ם | 9 |
| ज्ञान | पानेवालों-के-लिए | और-सीधे | समझनेवाले-के-लिए | सीधे | सब | |
| H1847 | H4672 | H3477 | H0995 | H5228 | H3605 | |

> विचारशील जन के लिये वे सब साफ़ है और ज्ञानी जन के लिये सब दोष रहित है।

10

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| קְחוּ־ | מוּסָרִי | וְאַל־ | כָּסֶף | וְדַעַת | מֵחָרוּץ | נִבְחָר׃ |
| लो- | शिक्षा-मेरी | और-मत- | चाँदी | और-ज्ञान | सोने-से | चुना-गया |
| H3947 | H4148 | H0408 | H3701 | H1847 | | H0977 |

चाँदी नहीं बल्कि तू मेरी शिक्षा ग्रहण कर उत्तम स्वर्ग नहीं बल्कि तू ज्ञान ले।

11

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| כִּי־ | טוֹבָה | חָכְמָה | מִפְּנִינִים | וְכָל־ | חֲפָצִים | לֹא | יִשְׁווּ־ | בָהּ׃ |
| क्योंकि- | अच्छी | बुद्धि | मोतियों-से | और-सब- | इच्छाएँ | नहीं | बराबर- | उसके |
| | | H2451 | H6443 | H3605 | H2656 | H3808 | | |

सुबुद्धि, रत्नों, मणि माणिकों से अधिक मूल्यवान है। तेरी ऐसी मनचाही कोई वस्तु जिससे उसकी तुलना हो।”

12

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| אֲנִי־ | חָכְמָה | שָׁכַנְתִּי | עָרְמָה | וְדַעַת | מְזִמּוֹת | אֶמְצָא׃ |
| मैं- | बुद्धि | निवास-करती-हूँ | चतुराई-में | और-ज्ञान | योजनाओं-का | पाती-हूँ |
| H0589 | H2451 | H7931 | H6195 | H1847 | H4209 | H4672 |

“मैं सुबुद्धि, विवेक के संग रहती हूँ, मैं ज्ञान रखती हूँ, और भले—बुरे का भेद जानती हूँ।

13

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| יִרְאַת | יְהוָה | שְׂנֹאת | רָע | גֵּאָה | וְגָאוֹן | וְדֶרֶךְ | רָע | וּפִי | תַהְפֻּכוֹת | שָׂנֵאתִי׃ |
| भय | यहोवा-का | बैर | बुराई-से | घमंड | और-अहंकार | और-राह | बुरी | और-मुख | टेढ़ेपन-का | बैर-रखती-हूँ-मैं |
| H3374 | H3068 | H8130 | | H1344 | H1347 | H1870 | | H6310 | H8419 | H8130 |

यहोवा का डरना, पाप से घृणा करना है। गर्व और अहंकार, कुटिल व्यवहार और पतनोन्मुख बातों से मैं घृणा करती हूँ।

14

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| לִי־ | עֵצָה | וְתוּשִׁיָּה | אֲנִי | בִינָה | לִי | גְבוּרָה׃ |
| मेरी- | सलाह | और-सफलता | मैं | समझ | मेरी | शक्ति |
| | H6098 | H8454 | H0589 | H0998 | | H1369 |

मेरे परामर्श और न्याय उचित होते हैं। मेरे पास समझ—बूझ और सामर्थ्य है।

15

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| בִּי | מְלָכִים | יִמְלֹכוּ | וְרוֹזְנִים | יְחֹקְקוּ | צֶדֶק׃ |
| मेरे-द्वारा | राजा | राज-करते-हैं | और-शासक | नियम-बनाते-हैं | धर्म |
| | H4428 | | H7336 | H2710 | H6664 |

मेरे ही साहारे राजा राज्य करते हैं, और शासक नियम रचते हैं, जो न्याय पूर्ण है।

16

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| בִּי | שָׂרִים | יָשֹׂרוּ | וּנְדִיבִים | כָּל־ | שֹׁפְטֵי | צֶדֶק׃ |
| मेरे-द्वारा | अधिकारी | शासन-करते-हैं | और-उदार | सब- | न्यायाधीश | धर्म-के |
| | H8269 | H8323 | H5081 | H3605 | H8199 | H6664 |

मेरी ही सहायता से धरती के सब महानुभाव शासक राज चलाते हैं।

17

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| אֲנִי | ]אהביה[ | )אֹהֲבַי( | אֵהָב | וּמְשַׁחֲרַי | יִמְצָאֻנְנִי׃ |
| मैं | — | प्रेमीं-अपने-से | प्रेम-करती-हूँ | और-ढूँढ़नेवाले-मुझे | पाएँगे-मुझे |
| H0589 | H0157 | H0157 | H0157 | H7836 | H4672 |

जो मुझसे प्रेम करते हैं, मैं भी उन्हें प्रेम करतीहूँ, मुझे जो खोजते हैं, मुझको पा लेते हैं।

18

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| עֹשֶׁר־ | וְכָבוֹד | אִתִּי | הוֹן | עָתֵק | וּצְדָקָה׃ |
| धन- | और-सम्मान | मेरे-पास | सम्पत्ति | स्थायी | और-धार्मिकता |
| H6239 | H3519 | H0854 | H1952 | H6276 | H6666 |

सम्पत्तियाँ और आदर मेरे साथ हैं। मैं खरी सम्पत्ति और यश देती हूँ।

19

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| טוֹב | פִּרְיִי | מֵחָרוּץ | וּמִפָּז | וּתְבוּאָתִי | מִכֶּסֶף | נִבְחָר׃ |
| अच्छा | फल-मेरा | सोने-से | और-कुन्दन-से | और-उपज-मेरी | चाँदी-से | चुनी-हुई |
| | H6529 | | H6337 | H8393 | H3701 | H0977 |

मेरा फल स्वर्ण से उत्तम है। मैं जो उपजाती हूँ, वह शुद्ध चाँदी से अधिक है।

20 בְּאֹרַח־ צְדָקָה אַהֲלֵךְ בְּתוֹךְ נְתִיבוֹת מִשְׁפָּט׃
पथ-में- धार्मिकता-के चलती-हूँ बीच-में पथों न्याय-के
H0734 H6666 H1980 H8432 H4941

मैं न्याय के मार्ग के सहारे नेकी की राह पर चलती रहती हूँ।

21 לְהַנְחִיל אֹהֲבַי יֵשׁ וְאֹצְרֹתֵיהֶם אֲמַלֵּא׃ פ
विरासत-देने-के-लिए प्रेमीों-अपने-को सम्पत्ति और-खजाने-उनके भरूँगी —
H5157 H0157 H3426 H0214 H4390

मुझसे जो प्रेम करते उन्हें मैं धन देती हूँ, और उनके भण्डार भर देती हूँ।

22 יְהוָה קָנָנִי רֵאשִׁית דַּרְכּוֹ קֶדֶם מִפְעָלָיו מֵאָז׃
यहोवा-ने बनाया-मुझे आरम्भ राह-अपनी-का पहले कार्यों-अपने-से तब-से
H3068 H7069 H7225 H1870

“यहोवा ने मुझे अपनी रचना के प्रथम अपने पुरातन कर्मो से पहले ही रचा है।

23 מֵעוֹלָם נְסֻכְתִּי מֵרֹאשׁ מִקַּדְמֵי־ אָרֶץ׃
अनन्तकाल-से स्थापित-हुई-मैं आदि-से पहले- पृथ्वी-से
H5769 H0776

मेरी रचना सनातन काल से हुई। आदि से, जगत की रचना के पहले से हुई।

24 בְּאֵין־ תְּהֹמוֹת חוֹלָלְתִּי בְּאֵין מַעְיָנוֹת נִכְבַּדֵי־ מָיִם׃
बिना- गहराइयों जन्मी-मैं बिना सोतों भरे-हुए- पानी-से
H0369 H8415 H2342 H0369 H4599 H3513 H4325

जब सागर नहीं थे, जब जल से लबालब सोते नहीं थे, मुझे जन्म दिया गया।

25 בְּטֶרֶם הָרִים הָטְבָּעוּ לִפְנֵי גְּבָעוֹת חוֹלָלְתִּי׃
पहले पहाड़ों डूबने-के सामने पहाड़ियों-के जन्मी-मैं
H2962 H2022 H2883 H6440 H1389

मुझे पर्वतों—पहाड़ियों की स्थापना से पहले ही जन्म दिया गया।

26 עַד־ לֹא עָשָׂה אֶרֶץ וְחוּצוֹת וְרֹאשׁ עִפְרוֹת תֵּבֵל׃
जब-तक- नहीं बनाई-थी-उसने पृथ्वी और-खुले-मैदान और-पहली धूल संसार-की
H5704 H3808 H6213 H0776 H2351 H7225 H6083 H8398

धरती की रचना, या उसके खेत अथवा जब धरती के धूल कण रचे गये।

27 בַּהֲכִינוֹ שָׁמַיִם שָׁם אֲנִי בְּחוּקוֹ חוּג עַל־ פְּנֵי תְהוֹם׃
स्थिर-करते-हुए-उसके आकाश वहाँ मैं खींचते-हुए-उसके वृत्त -पर मुख गहराई-के
H8064 H8033 H0589 H2710 H2329 H5921 H6440 H8415

मेरा अस्तित्व उससे भी पहले वहाँ था। जब उसने आकाश का वितान ताना था और उसने सागर के दूसरे छोर पर क्षितिज को रेखांकित किया था।

28 בְּאַמְּצוֹ שְׁחָקִים מִמַּעַל בַּעֲזוֹז עִינוֹת תְּהוֹם׃
दृढ़-करते-हुए-उसके बादल ऊपर-से मजबूत-होते-हुए सोते गहराई-के
H0553 H7834 H4605 H5810 H5869 H8415

उसने जब आकाश में सघन मेघ टिकाये थे, और गहन सागर के स्रोत निर्धारित किये,

29

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| בְּשׂוּמוֹ | לַיָּם | חֻקּוֹ | וּמַיִם | לֹא | יַעַבְרוּ־ | פִּיו | בְּחוּקוֹ | מוֹסְדֵי | אָרֶץ׃ |
| ठहराते-हुए-उसके | समुद्र-को | सीमा-उसकी | और-पानी | नहीं | लाँघे- | आज्ञा-उसकी | खींचते-हुए-उसके | नींव | पृथ्वी-की |
| | H3220 | H2706 | H4325 | H3808 | | H6310 | H2710 | H4144 | H0776 |

उसने समुद्र की सीमा बांधी थी जिससे जल उसकी आज्ञा कभी न लाँघे, धरती की नीवों का सूत्रपात उसने किया, तब मैं उसके साथ कुशल शिल्पी सी थी।

30

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| וָאֶהְיֶה | אֶצְלוֹ | אָמוֹן | וָאֶהְיֶה | שַׁעֲשֻׁעִים | יוֹם | יוֹם | מְשַׂחֶקֶת | לְפָנָיו | בְּכָל־ | עֵת׃ |
| और-थी-मैं | पास-उसके | कारीगर | और-थी-मैं | आनन्द | दिन | दिन | खेलती-हुई | सामने-उसके | सब- | समय |
| H1961 | H0681 | H0525 | H1961 | H8191 | H3117 | H3117 | H7832 | H6440 | H3605 | H6256 |

मैं दिन—प्रतिदिन आनन्द से परिपूर्ण होती चली गयी। उसके सामने सदा आनन्द मनाती।

31

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| מְשַׂחֶקֶת | בְּתֵבֵל | אַרְצוֹ | וְשַׁעֲשֻׁעַי | אֶת־ | בְּנֵי | אָדָם׃ | פ |
| खेलती-हुई | संसार-में | पृथ्वी-उसकी | और-आनन्द-मेरे | -के-साथ | पुत्रों | आदम-के | — |
| H7832 | H8398 | H0776 | H8191 | H0854 | | H0120 | |

उसकी पूरी दुनिया से मैं आनन्दित थी। मेरी खुशी समूची मानवता थी।

32

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| וְעַתָּה | בָנִים | שִׁמְעוּ־ | לִי | וְאַשְׁרֵי | דְּרָכַי | יִשְׁמֹרוּ׃ |
| और-अब | पुत्रो | सुनो- | मुझे | और-धन्य | राहें-मेरी | रक्षा-करनेवाले |
| H6258 | | H8085 | | H0835 | H1870 | H8104 |

“तो अब, मेरे पुत्रों, मेरी बात सुनो। वो धन्य है! जो जन मेरी राह पर चलते हैं।

33

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| שִׁמְעוּ | מוּסָר | וַחֲכָמוּ | וְאַל־ | תִּפְרָעוּ׃ |
| सुनो | शिक्षा | और-बुद्धिमान-बनो | और-मत- | अनदेखा-करो |
| H8085 | H4148 | H2449 | H0408 | |

मेरे उपदेश सुनो और बुद्धिमान बनो। इनकी उपेक्षा मत करो।

34

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אַשְׁרֵי | אָדָם | שֹׁמֵעַ | לִי | לִשְׁקֹד | עַל־ | דַּלְתֹתַי | יוֹם | יוֹם | לִשְׁמֹר | מְזוּזֹת | פְּתָחָי׃ |
| धन्य | मनुष्य | सुननेवाला | मुझे | जागते-हुए | -पर | दरवाजों-मेरे | दिन | दिन | रक्षा-करते-हुए | चौखटों | दरवाजों-मेरे-की |
| H0835 | H0120 | H8085 | | H8245 | | | H3117 | H3117 | H8104 | H4201 | H6607 |

वही जन धन्य है, जो मेरी बात सुनता और रोज मेरे द्वारों पर दृष्टि लगाये रहता एवं मेरी ड्योढ़ी पर बाट जोहता रहता है।

35

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| כִּי | מֹצְאִי | [מצאי] | (מָצָא) | חַיִּים | וַיָּפֶק | רָצוֹן | מֵיְהוָה׃ |
| क्योंकि | पानेवाला-मुझे | — | पाता-है | जीवन | और-प्राप्त-करता-है | कृपा | यहोवा-से |
| | H4672 | H4672 | H4672 | | H6329 | H7522 | H3068 |

क्योंकि जो मुझको पा लेता वही जीवन पाता और वह यहोवा का अनुग्रह पाता है।

36

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| וְחֹטְאִי | חֹמֵס | נַפְשׁוֹ | כָּל־ | מְשַׂנְאַי | אָהֲבוּ | מָוֶת׃ | פ |
| और-पाप-करनेवाला-मेरे-विरुद्ध | हिंसा-करता-है | प्राण-अपने-की | सब- | बैर-रखनेवाले-मुझसे | प्रेम-करते-हैं | मृत्यु-से | — |
| H2398 | H2554 | H5315 | H3605 | H8130 | H0157 | H4194 | |

किन्तु जो मुझको, पाने में चूकता, वह तो अपनी ही हानि करता है। मुझसे जो भी जन सतत बैर रखते हैं, वे जन तो मृत्यु के प्यारे बन जाते हैं!”